कागज़ और कैनवस

कागज़ और कैनवस

इमरोज के नाम !

कागज़ और कैनवस

कागज़ और कैनवस

रात ऊँघ रही है···
किसी ने इन्सान की छाती में सेंध लगाई है
हर चोरी से भयानक यह सपनों की चोरी है।

चोरी के निशान—
हर देश के हर शहर की हर सड़क पर बैठे हैं
पर कोई आँख देखती नहीं, न चौंकती है।
सिर्फ एक कुत्ते की तरह एक जंजीर से बँधी
किसी वक़्त किसी की कोई नज़्म भौंकती है।

ओ मेरे दोस्त ! मेरे अजनबी !

इक वार अचानक तू आया—
तां वक्त असलों हैरान, मेरे कमरे 'च खलोता रह गया···
तरकालां दा सूरज लहिण वाला सी पर लहि ना सकिआ
ते घड़ी कु उस ने डुबण दी किस्मत विसार दित्ती
फिर अजलां दे नेम ने इक दुहाई दित्ती,
ते वक्त ने—बीते खलोते छिणा नूं तकिआ
ते घावर के बारी 'चों छाल मार दित्ती।
उह बीते खलोते छिणा दी घटना
हुण तैनूं वी बड़ी असचरज लगदी है
ते मैनूं वी बडी असचरज लगदी है
ते शायद वक्त नू वी फेर उह गलती गवारा नहीं—
हुण सूरज रोज वेले सिर डुब जांदा है
ते हनेरा रोज मेरी छाती विच गुभ जांदा है
पर बीते-खलोते छिणां दा इक सच है
हुण तू ते मैं, मनणा चाहिए जां नां इह बगारी गल्ल है
पर उस दिन वक्त ने जद बारी 'चों छाल मारी सी
ते उस दे गोडिआं विचों जो लहू सिमिआ सी
उह लहू मेरी बारी दे थल्ले अजे तक जम्मिआ होइआ ···

ऐ मेरे दोस्त ! मेरे अजनबी !

एक बार अचानक तू आया
तो वक़्त बिल्कुल हैरान मेरे कमरे में खड़ा रह गया।
साँझ का सूरज अस्त होने को था, पर हो न सका
और डूबने की किस्मत वह भूल-सा गया।
फिर अज़ल के असूल ने एक दुहाई दी,
और वक़्त ने उन खड़े क्षणों को देखा
और खिड़की के रास्ते बाहर को भागा।
वह बीते और ठहरे क्षणों की घटना—
अब तुझे भी एक बड़ा आश्चर्य होता है
और मुझे भी एक बड़ा आश्चर्य होता है
और शायद वक़्त को भी फिर वह ग़लती गवारा नहीं,
अब सूरज रोज वक़्त पर डूब जाता है
और अंधेरा रोज मेरी छाती में उतर आता है।
पर बीते और ठहरे क्षणों का एक सच है—
अब तू और मैं मानना चाहे या नहीं, यह और बात है।
पर उस दिन वक़्त जब खिड़की के रास्ते बाहर को भागा
और उस दिन जो खून उसके घुटनों से रिसा
वह खून मेरी खिड़की के नीचे अभी तक जमा हुआ है।…

अश्वमेध यज्ञ

इक चेतर दी पुनिग्रां सी—
कि चिट्टा दुध मेरे इश्क दा घोड़ा
देसां ते बदेसां नू गाहुण तुरिग्रा ··
सारा शरीर सच वांग चिट्टा
ते सउले कन बिरहा रंग दे।
सोने दा इक पतरा उहदे मत्थे दे उत्ते
'इह दिग विजै दा घोड़ा—
कोई बलवान है ता इस नू फड़े ते जित्ते'
ते जीकण इस यज्ञ दा इक नेम है—
इह जित्थे वी खलोता मैं गीत दान कीते
ते कई थावें मैं हवन तारिग्रा,
सो जिसने वी जितणा चाहिग्रा, वह हारिग्रा।
ग्रज उमर वाली ग्रउध मुकी है
ते इह सलामत मेरे कोल मुड़िग्रा है,
पर कही ग्रणहोणी—
कि पुन्न दी इच्छा नहीं, ना फल दी लालसा बाकी
इह चिट्टा दुध मेरे इश्क दा घोड़ा
मारण नहीं हुंदा···मारण नहीं हुंदा ··
बस इहोंग्रो सलामत रहे, पूरा रहे !
रहे।

अश्वमेध यज्ञ

एक चैत की पूनम थी
कि दूधिया श्वेत मेरे इश्क का घोड़ा
देश और विदेश में विचरने चला
सारा शरीर सच सा श्वेत
और श्यामकर्ण विरही रंग के।
एक स्वर्णपत्र उसके मस्तक पर
'यह दिग्विजय का घोड़ा—
कोई सबल है तो इसे पकड़े और जीते'
और जैसे इस यज्ञ का एक नियम है
यह जहाँ भी ठहरा मैंने गीत दान किये
और कई जगह हवन रचा
सो जो भी जीतने को आया वह हारा।
आज उम्र की अवधि चुक गई है
और यह सकुशल मेरे पास लौटा है,
पर कैसी अनहोनी—
कि पुण्य की इच्छा नहीं, न फल की लालसा शेष
यह दूधिया श्वेत मेरे इश्क का घोड़ा
मारा नहीं जाता·· मारा नहीं जाता
बस यही सकुशल रहे, पूरा रहे !
मेरा अश्वमेध यज्ञ अधूरा है, अधूरा रहे।

मैं

बहुत समकाली हन—
सिर्फ इक 'मैं' मेरा समकाली नहीं ।
'मैं' बिना मेरा जन्म
पुन्न दी थाली दे विच अपराध दा इक दाणा है ।
मास दे विच कैद होइआ मास दा इक छिण है ।
ते मास दी इस जीभ उत्ते—
जदों वी कोई सफ्ज़ अउंदा, खुदकशी करदा,
जे खुदकशी तों बचदा—
कागज़ 'ते उतरदा, तां कत्ल हुंदा है ।
बन्दूक दी गोली—
जे इक वार मैंनू हनोई विच लगदी है,
तां दूसरी वारी प्राग विच लगदी
ते इक धुआं हवा दे विच तरदा है,
ते मेरा 'मैं' अठमाहे बच्चे दी तरहां मरदा है ।
की किसे दिन, इह मेरा 'मैं' मेरा समकाली बणेगा ?

मैं

बहुत समकालीन है—
सिर्फ एक 'मैं' मेरा समकालीन नहीं।
'मैं' बिना मेरा जन्म—
पुण्य की थाली में पड़ा अपराध का एक शगुन है।
मास में बन्दी हुआ मांस का एक क्षण है।
और मांस की हर जीभ पर—
जब भी कोई लफ्ज़ आता, खुदकशी करता,
जो खुदकशी से बचता—
कागज़ पर उतरता, तो कत्ल होता है।
बन्दूक की गोली—
जो एक बार मुझे हनोई में लगती है
तो दूसरी बार प्राग में लगती है।
और एक धुआं हवा में तैरता है,
और मेरा 'मैं' अटवांसे बच्चे की तरह मरता है।
क्या किसी दिन यह मेरा 'मैं' मेरा समकालीन बनेगा?

इक मुलाकात

कई वरिहां दे पिच्छों अचानक इक मुलाकात
ते दोहां दी जिंद इक नज़म वांग कम्बी ··

साहवे यमुनां रात सी
पर अद्धी नज़म इक गुठ विच लग्गी रही
ते अद्धी नज़म इक गुठ विच लग्गी रही···

फिर सवेर सार—
असी कागज दे पाटे होये टुकड़ियाँ दी तराह मिले
मैं आपणे हत्थ विच उहदा हत्थ फड़िआ
उस आपणी बांह विच मेरी बांह लीती

ते फेर असी दोवें इक सेंसर दी तरहा हस्से
ते कागज नू इक ठंडे मेज ते रख के
उस सारी नज़म ते इक लीक फेर दित्ती···

कई बरसों के बाद अचानक एक मुलाकात
हम दोनों के प्राण एक नज़्म की तरह काँपे ··

सामने एक पूरी रात थी—
पर आधी नज़्म एक कोने में सिमटी रही
और आधी नज़्म एक कोने में बैठी रही

फिर सुबह सवेरे—
हम कागज़ के फटे हुए टुकड़ों की तरह मिले
मैंने अपने हाथ में उसका हाथ लिया
उसने अपनी बाँह में मेरी बाँह डाली

और हम दोनों एक सेंसर की तरह हँसे
और कागज़ को एक ठंडे मेज़ पर रखकर
उस सारी नज़्म पर लकीर फेर दी···

इक मुलाकात

मैं चुप शान्त ते अडोल खड़ी सां···
सिर्फ कोल वगदे समुंदर दे विच तुफान सी···
फिर समुंदर नू रब जाणे की ख्याल आया
उस आपणे तुफ़ान दी इक पोटली बद्धी
मेरे हत्थां 'च फड़ाई, ते हस्स के कुछ परहां हो गिआ···

हैरान सां—पर उस दा चमत्कार फड़ लिआ
पता सी—कि जिही घटना कदे सदीआं 'च हुंदी है···

लक्खां ख्याल आये
मत्थे 'च झिलमिलाये

पर खलोती रह गई, कि इस नू चुक के
अज आपणे शहर विच मैं किवें जावांगी ?
मेरे शहर दी हर गली भीड़ी है
मेरे शहर दी हर छत्त नीवीं है
मेरे शहर दी हर कंध चुगली है

मैं सोचिआ—जे तू किते लभें
तां समुंदर दी तरहा इहनू छाती ते रख के
असीं दो किनारिआं दी तरहा हस्स सकदे सां

एक मुलाकात

मैं चुप, शान्त और अडोल खड़ी थी
सिर्फ पास बहते समुद्र में तूफान था···
फिर समुद्र को खुदा जाने क्या ख्याल आया
उसने तूफान की एक पोटली सी बांधी
मेरे हाथों में थमाई और हंसकर कुछ दूर हो गया

हैरान थी पर उसका चमत्कार ले लिया
पता था कि इस तरह की घटना कभी सदियों में होती है···

लाखों ख्याल आये—
माथे में झिलमिलाये

पर खड़ी रह गई कि इसको उठाकर
अब अपने शहर में मैं कैसे जाऊंगी ?
मेरे शहर की हर गली संग है
मेरे शहर की हर छत नीची है
मेरे शहर की हर दीवार चुगली है

सोचा अगर तू कहीं मिले
तो समुद्र की तरह इसे छाती पर रखकर
हम दो किनारों की तरह हंस सकते थे

ते नीवीआं छत्तां
ते भीड़ीआं गलीआं दे शहर विच वस्स सकदे सां···

पर सारी दुपहर तैनूं लभदिआं बीती
ते आपणी अग्ग दा मैं आपे ही घुट पीता
मैं इक 'कल्ला किनारा, किनारे नूं खोर लीता,
ते दिहुं लहिण वेले—
समुदर दा तुफ़ान समुंदर नूं मोड़ दित्ता

हुण रात पैण लग्गी तां तू मिलिआ एं
तूवी उदास, चुप, शान्त, ते अडोल
मैं वी उदास, चुप, शान्त, ते अडोल
सिर्फ़—दूर वगदे समुंदर दे विच तुफान है ··

और नीची छतों—
और सँकरी गलियों के शहर में बस सकते थे···

पर सारी दोपहर तुझे ढूंढते बीती
और अपनी आग को मैंने खुद ही पी लिया
मैं एक अकेला किनारा, किनारे को मैंने खोर लिया,
और जब दिन ढलने को था—
समुद्र का तूफान, समुद्र को लौटा दिया ·

अब रात घिरने लगी तो तू मिला
तू भी उदास, चुप, शान्त और अडोल
मैं भी उदास, चुप, शान्त और अडोल
सिर्फ—दूर बहते समुद्र में तूफ़ान है ·

इक घटना

तेरीआं यादां
बहुत देर होई जलावतन होईआं
जीउंदिआं कि मोईआं—कुछ पता नही।

सिर्फ इक वारी इक घटना वापरी
ख्यालां दी रात बड़ी डूघी सी
ते एनी चुप सी
कि पत्ता खड़किआं वी
वरि्हां दे कंन अभकदे।

फेर तिन वारां जापिआ
छाती दा बूहा खड़कदा
ते पोले पैर छत 'ते चढ़दा कोई
ते नहुंआं दे नाल पिछली कंध खुरचदा।

तिन वारां उठके मैं कुंडीआं टोहीआं
हनेरे नूं जिस तरहां इक गर्भ पीड़ सी
उह कदे कुछ कहिंदा, ते कदे चुप हुंदा
ज्यों अपनी आवाज नू दंदां दे विच पीहंदा
ते फेर जीउंदी जागदी इक शै
ते जीउंदी जागदी आवाज !

एक घटना

तेरी यादें
बहुत दिन बीते जलावतन हुईं
जीती कि मरी—कुछ पता नहीं।

सिर्फ एक बार—एक घटना घटी
ख्यालों की रात बड़ी गहरी थी
और इतनी स्तब्ध थी
कि पत्ता भी हिले
तो बरसों के कान चौंकते।

फिर तीन बार लगा
जैसे कोई छाती का द्वार खटखटाये
और दबे पाँव छत पर चढ़ता कोई
और नाखूनों से पिछली दीवार को कुरेदत

तीन बार उठकर मैंने साँकल टटोली
अन्धेरे को जैसे एक गर्भ पीड़ा थी
वह कभी कुछ कहता और कभी चुप होता
ज्यों अपनी आवाज को दाँतों में दबाता
फिर जीती जागती एक चीज
और जीती जागती आवाज।

"मैं काले कोसों से आई हूँ
प्रहरियों की आँख से इस बदन को चुराती
धीमे से आती
पता है मुझे कि तेरा दिल आबाद है
पर कहीं वीरान सूनी कोई जगह मेरे लिए !"

... ...

सूनापन बहुत है पर तू···
चौंक कर मैंने कहा—
"तू जलावतन : नहीं कोई जगह नहीं
मैं ठीक कहती हूँ—कि कोई जगह नहीं तेरे लिए
यह मेरे मस्तक, मेरे आका का हुक्म है

... ...

और फिर जैसे सारा अँधियारा काँप जाता है
वह पीछे को लौटी
पर जाने से पहले कुछ पास आई
और मेरे वजूद को एक बार छुआ
धीरे से—
ऐसे, जैसे कोई वतन की मिट्टी को छूता है :

गली दा कुत्ता

कई वरिहां दी गल्ल है—
जद तूं ते मैं निखड़े
कोई पछतावा नहीं
सिर्फ़—इक गल्ल कुझ समझ विच नही अउंदी…

तूं ते मैं जद विदा कह रहे सां
ते साडा मकान विक रिहा सी
चौंके दे सल्लणे भांडे विहड़े 'च पए सन—
शाइद मेरीआं जा तेरीआं मसां 'च वेखदे,
कुझ मूधे वी सन—
शाइद मुंह छुपा रहे सी।

… … …

इक सूहे दी वेल सी मुरझाई जिही
शाइद तैनूं ते मैनूं कुझ कहि रही
—जां पाणी दी टूटी नूं उलांभा दे रही…

इह सब कुझ ते होर वहो जिहा
बड़े चेते नहीं अउंदा,
सिर्फ़ इक गल्ल कुझ बहुत याद अउंदी है—

गली का कुत्ता

कई बरसो की बात है—
जब तू और मैं बिछुड़े
कोई पश्चात्ताप नही
सिर्फ—एक बात कुछ समझ में नही आती ··

तू और मैं जब विदा कह रहे थे
और हमारा मकान बिक रहा था
चौके के खाली बर्तन आंगन में पड़े थे—
शायद मेरी या तेरी आंखों में देखते,
कुछ औंधे भी थे—
शायद मुंह छुपा रहे थे।

... .

एक द्वार की लता, मुरझाई सी
शायद मुझे और तुझे कुछ कह रही थी
—या पानी के नल को उलाहना दे र

यह सब कुछ और इस सरीखा
कभी याद नहीं आता
सिर्फ एक बात कुछ हूतब याद आती है—

कि इक सड़क दा कुत्ता—
कीकण, ते की सुंघदा
इक सख्खणे कमरे 'च वड़ गिग्रा
ते कमरे दा बूहा बाहरों दी बन्द हो गिग्रा

फेर तीजे दिहाड़े—
मकान दा सौदा जद नेपरे चढ़िग्रा
ते चाबीग्रां दे नाल ग्रसां नोटां नू वटाइग्रा
नवें मालक नू हर इक जंदरा सौंपिग्रा
ते इक्क इक्क कमरा विखाइया
तां इक्क कमरे दे विच्च उस कुत्ते दी लाश सी···

मैं उसदा भौंकणां कदे कन्नी नहीं सुणिग्रा
—सिर्फ़ उस दी बो सुंघी सी
ते उही बो, हुण वी ग्रचानक—
मैंनू कई चीजां 'चो ग्रउदी है···

कि एक सड़क का कुत्ता—
कैसे, और क्या सूंघता
एक खाली कमरे में जा घुसा
और कमरे का द्वार बाहर से बन्द हो गया

फिर तीसरे दिन—
मकान का सौदा जब निबट गया
और चाबियों से हमने नोट बदलाये
नये मालिक को हर ताला जब सौंपा
और एक एक कमरा दिखाया
तो एक कमरे में उस कुत्ते की लाश थी

मैंने उसका भौंकना कभी कानों न सुना
सिर्फ उसकी बू सूंघी थी
और वही बू अब भी अचानक—
मुझे कई चीजों से आती है

वैराग

चिरां तों इक गल्ल चली अउंदी सी—
कि वेले दी ताकत वड्ढी तारदी
इतिहास तों चोरी इतिहास दे वरके खरीददी,
जदों वी चांहदी रही
कुझ सतरां बदलदी ते कुझ बुझांदी रही,
इतिहास हसदा रिहा खिझदा रिहा,
ते हर इतिहासकार नूं उह माफ़ करदा रिहा,
पर अज शायद उह बहुत ही उदास है—
इक हथ उस दी जिल्द चुक के—
कुझ वरकिआं नू पाड़दा
ते उन्हां दी थावें होर वरके सी रिहा
अते इतिहास—चुपचाप वरकिआं 'चों निकलके
इक रुख दे थल्ले खलोता सिगरट पी रिहा।

वैराग्य

मुद्दत से एक बात चली आती थी
कि वक़्त की ताक़त रिश्वतें देती
इतिहास से चोरी इतिहास के पन्नों को खरीदती
वह जब भी चाहती रही
कुछ पंक्तियाँ बदलती और कुछ मिटाती रही,
इतिहास हँसता रहा खीझता रहा,
और हर इतिहासकार को वह माफ करता रहा।
पर आज शायद बहुत ही उदास है—
एक हाथ उसकी जिल्द को उठाकर
कुछ पन्नों को फाड़ता
और उनकी जगह कुछ और पन्ने सी रहा है
और इतिहास—चुपके से उन पन्नों से निकलकर
एक पेड़ के नीचे खड़ा एक सिगरेट पी रहा है ···

सफ़रनामा

गंगाजल तों लै के वोदका तीकण
इह सफ़रनामा है मेरी पिआस दा ··
सादा पवित्र जनम दे, सादा अपवित्र करम दा, इक सादा इलाज
ते किसे महबूब चेहरे नू इक छलकदे गलास विच तकण दा जतन
ते आपणे पिंडे दे उत्तों, इक सतपराये ज़खम नूं भूलण दी लोड़

इह किन्ने तिकोन पत्थर हन—
जो किसे पाणी दे घुट सदका, मैं संघ 'चों लंघाए हन।
किन्ने भविख हन—जो वरतमान तों वचाए हन
ते शायद वरतमान वी—मैं वरतमान तों वचाइआ है··

सिर्फ़ इक खिआल आइआ है
कई वार अउंदा है—
जिऊं कई वार इक सारंगी दा गज़—
अचानक किसे राग दी छाती दे विच खुभदा है।
जां चुपचाप इक पिआनो—
कालिआं ते चिट्टिआं दंदां दे विच संगीत चबदा है।

इक खिआल अउंदा है—
पर जिवें कोई मौत दा इक घुट्ट भरे
डरे, ते फेर छेती नाल उसदे खिआल दी उल्टी करे···

सफ़रनामा

गंगाजल से लेकर वोदका तक,
यह सफ़रनामा है मेरी प्यास का…
सादा पवित्र जन्म के, सादा अपवित्र कर्म का, एक सादा इलाज
और किसी महबूब चेहरे को एक छलकते गिलास में देखने का यत्न
और अपने बदन से एक बिल्कुल बेगाने ज़ख्म को भूलने की ज़रूरत

यह कितने तिकोन पत्थर हैं—
जो किसी पानी के घूंट से गले से उतारे हैं
कितने भविष्य है जो वर्तमान से बचाये हैं
और शायद वर्तमान भी—मैंने वर्तमान से बचाया है…

सिर्फ़ एक ख्याल आया है
कई बार आता है—
ज्यों कई बार एक सारंगी का गज—
अचानक किसी राग की छाती में चुः
या चुपचाप एक पियानो—
काले और श्वेत दोनों में संगीत चाब

एक ख्याल आता है—
पर जैसे कोई मौत का एक घूंट भरे
डरे, और फिर जल्दी में उस ख्याल की कै सी करे·

पर गोईयां छातीयां दे विच वी कुम्म साह् जीउंदे हन
ते भटके गाहकां दे नाल धम मैं भाग लबदी हां···
कि हर इक सफर सिरफ़ उस्तों शुरू हुंदा है—
—जिथे इह सफ़रनामे खतम हुंदे हन।

पर मरे सीनों में भी कुछ सांस जीते हैं
और अटके सांसों के साथ मैं कह सकती हूं…
कि हर एक सफ़र सिर्फ वही शुरू होता है
—जहां यह सफ़रनामे खत्म होते हैं

ऐश ट्रे

इलहाम दे धूएं तों लैके सिगरट दी राख तक
उमर दा सूरज ढले
मत्थे दी सोच बले
इक फेफड़ा गले
इक वीयतनाम जले

ते रौशनी—हनेरे दा पिद्दा जिउं ताप विच थूके
ते ताप दी थूकी दे विच—
हर मज़हब बरड़ावे
हर फ़लसफा मंगावे
हर नज़म थथलावे
श्राखणा चाहवे—
कि हर सलतनत सिक्के दी हुंदी है, बारूद दी हुंदी है,
ते हर जनमपत्री—
श्रादम दे जनम दी इक झूठी गवाही देंदी है।

पैर विच लोहा वले
कन्न विच पत्थर ढले
सोचां दा हिसाब रुके
सिक्के दा हिसाब चले।

ऐश ट्रे

इलहाम के धुएँ से लेकर सिगरेट की राख तक
उम्र का सूरज ढले
माथे की सोच बले
एक फेफड़ा गले
एक वीयतनाम जले

और रोशनी—अन्धेरे का बदन ज्यों ज्वर में तपे
और ज्वर की अचेतना में—
हर मज़हब बरड़ाये
हर फलसफा लँगड़ाये
हर नज़्म तुतलाये
और कहना सा चाहे
कि हर सल्तनत सिक्के की होती है, बारूद की होती है
और हर जन्मपत्री—
आदम के जन्म की एक झूठी गवाही देती है।

पैर में लोहा डले
कान में पत्थर ढले
सोचों का हिसाब रुके
सिक्के का हिसाब चले

और मैं आदम—अन्त में बनता मांस की एक ऐश ट्रे
इलहाम के धुएँ से लेकर सिगरेट की राख तक
मैंने जो फिकर पिये
उनकी राख झाड़ी थी
तुम भी झाड़ सकते हो

और चाहो तो मांस की यह ऐश ट्रे मेज पर सजाओ
या गान्धी, लूथर और कैनेडी कहकर
चाहो तो तोड़ सकते हो ··

ग्रचानक इक काग़ज़ ग्रगांह हुंदा है
ते उसदे कंबदे हथां नू छोंहदा है
इक ग्रंग बलदा है
इक ग्रंग पिघलदा है
ते उह एक ग्रजनबी हवाड़ सुंघदी है
ते उहदा हत्थ—पिंडे 'च उतर ग्राइग्रां लीकां नूं वेहं

हत्थ उंघलांदा है, पिंडा उपरांदा है
ते मत्थे दे उत्ते इक ग्रेली जिही छुटदी
इक लम्बी लकीर टुटदी
ते साह—
जनम दो ते मौत दी दूहरी हवाड़ विच भिज जांदा है

इह सब कालीग्रां ते पतलीग्रां लीकां
जिउं इक लीक दे कुझ टुकड़े जहे हुंदे ··
उह चुप ते हैरान, नुँचड़ी खलोती, वेखदी
सोचदी—
कि कोई ग्रनिग्रां होइग्रा है
उहदा कोई ग्रंग मोइग्रा है
शायद इक कुग्रारी दा गर्भपात इंजे ही हुंदा है···

अचानक एक कागज आगे को बढ़ता है
और उसके कांपते हाथों को छूता है
एक अंग जलता है
एक अंग पिघलता है
और वह एक अजनबी गंध सूंघती
और उसका हाथ तन में उतर आई लकीरों को देखता है

हाथ कँपता बदन छटपटाता
और माथे पर एक पसीना सा छूटता
एक लम्बी लकीर टूटती
और सांस—
जन्म की और मौत की दोहरी गंध में भीग जाता है

यह सब काली और पतली लकीरें
जैसे एक लम्बी चीख के कुछ टुकड़े से होते
वह चुप और हैरान निचुड़ी सी खड़ी, देखती
सोचती—
कि कोई अन्याय हुआ है
उसका कोई अंग मर गया है
शायद एक कँवारी का गर्भपात ऐसे ही होता है…

टोस्ट

कल शीशे दी सुराही विच
मैं ख्यालां दी शराब भरी सी
ख्याल बड़े सूहे सन
दोस्तां ने जाम पीते सन
ते उहनां लफ़ज़ां दे टोस्ट दित्ते सन
जो छाती दे विच नहीं उगदे ।
उह किहड़िआं रुक्खां ते उगदे हन
ते होंठां दे गमलिआं विच किवें अउंदे हन
इह सोचण दी वेहल नहीं सी,
जां इजं आखां कि सोचण तों सहम लगदा सी
इह लफ़ज़ां दा जशन सी
भुलेखिआं दी वर्‌हे—गंढ
मैं सां, रात सी, ख्यालां दी शराब सी, ते बड़े दोस्त—
दोस्त जो कुझ बुलाइआं आये सन, कुछ बिन बुलाइआं ।
सिर्फ़ इक कोई 'उह' सी
जो वड़ी वार सॅदण ते वी नहीं सी आया ।
...   .
हुणे प्रभात होई है—
छाती नू चीर के छाती दे विच सूरज दी किरण पई है
हुणे—मैं इक घणा जंगल वेखिआ
ते गरज़ां दे फ़ाग पैमे हन

टोस्ट

कल शीशे की सुराही में
मैंने ख्यालों की शराब भरी थी
ख्याल बड़े सुर्ख थे
दोस्तों ने जाम पिये थे
और उन लफ़्जों के टोस्ट दिये थे
जो छाती में नहीं उगते।
वह कौन से पेड़ों पे उगते हैं
और होठों के गमलों में किस तरह आते हैं।
यह सोचने का वक़्त न था,
या इस तरह कहूँ कि सोचने में खौफ लगता था
यह लफ़्ज़ों का जशन था
भुलावों की वर्षगांठ
मैं थी, रात थी, ख्यालों की शराब थी, और बहुत दोस्त
दोस्त जो कुछ बुलाने पर आये थे, कुछ बिनबुलाये।
सिर्फ एक कोई 'वह' था
जो बहुत बार बुलाने पर भी नहीं आया था
...   .
अभी सुबह हुई है—
छाती को चीरकर छाती में सूरज की किरण पड़ी है
अभी मैंने एक सघन वन देखा है
खुदगर्जियों के पेड़ देखे हैं

ते उहना ते आई अजीब पतझड़ दी वेरी है
पतझड़ - जो पत्तां ते नहीं झड़दी,
सिर्फ़ अर्थां ते झड़दी है
दोस्तां दे नाज़ अते वी गुनाही हुन
बहार दे फुल्लां दी तरहां
सिर्फ़ अर्थ झड़दे वेख रही हां
ते भरे जंगल विच मैं अगलों इकल्ली हां
मैं हां, धुप है, इक किरन है, ते शीशे दी खाली सुराही है
... .

इह किसी धुप है कि जिहदे विच पैरां दा खड़ाक शामिल है
कोई चुपचाप आया है—
धुप नालों टुटिआ धुप दा हिस्सा
किरन नालों टुटिआ किरन दा हिस्सा
इह इक कोई 'उह' है
जो बड़ी वार संदेश ते वी नहीं सी आया।
ते हुण मैं इकल्ली नहीं, मैं आपणे आप नाल खड़ी हां
शीशे दी सुराही विच मैं नज़रां दी शराब भरी है—
ते असी दोवें जाम पी रहे हां
उह टोस्ट दे रिहा है उहनां लफ़जां दे
जो सिर्फ़ छाती दे विच उगदे हन।
इह अर्थां दा जशन है—
मैं हां, उह है, ते शीशे दी सुराही विच नज़रां दी शराब है···

और पेड़ों पर आई अजीब पतझड़ भी देखी है
पतझड़—जो लफ़्ज़ों पर नहीं आती,
सिर्फ अर्थों पर आती है
दोस्तों के लफ़्ज अभी भी गुलाबी हैं
बहार के फूलों की तरह
सिर्फ अर्थ झरते देख रही हूँ ···
और भरे जंगल में मैं बिल्कुल अकेली हूँ ···
मैं हूँ, चुप है, एक किरण है, और शीशे की खाली सुराही है

... ...

यह कैसी चुप है कि जिसमें पैरों की आहट शामिल है
कोई चुपके से आया है—
चुप से टूटा हुआ—चुप का टुकड़ा
किरण से टूटा हुआ किरण का टुकड़ा
यह एक कोई 'वह' है
जो बहुत बार बुलाने पर भी नहीं आया था।
और अब मैं अकेली नहीं, मैं आप अपने संग खड़ी हूँ
शीशे की सुराही में नजरों की शराब भरी है—
और हम दोनों जाम पी रहे हैं
वह टोस्ट दे रहा है उन लफ़्जों के
जो सिर्फ छाती में उगते हैं।
यह अर्थों का जशन है—
मैं हूँ, वह है, और शीशे की सुराही में नजरों की शराब है

कुमारी

मैं तेरी सेज ते जद पैर धरिश्रा सी
मैं इक नही सा—दो सां
इक सालम व्याही ते इक सालम कुश्रारी···
सो तेरे भोग दी खातिर—
मैं उस कुश्रारी नू कतल करना सी
मैं कतल कीता सी—
इह कतल जो कानूनन जायज़ हुंदे हन,
सिर्फ उन्हा दी ज़िल्लत नाजायज़ हुंदी है ।
ते मैं उस ज़िल्लत दा ज़हर पीता सी
ते फिर प्रभात वेले—
इक लहू विच भिज्जे मैं श्रापणे हत्थ वेखे सन,
हत्थ धोते सन—
बिल्कुल उस तरहां ज्यों होर मुशकी श्रंग धोणे सी ।
पर ज्यों ही मैं शीशे दे साहमणे होई
उह साहमणे खलोती थी
उहो, जो श्रापणी जाचे मैं राती क़तल कीती सी
श्रो खुदाया !
की सेज दा हनेरा बहुत गाढ़ा सी ?
मैं किहनू क़तल करना सी, ते किहनू क़तल कर बैठी···

कँवारी

मैंने जब तेरी सेज पर पैर रखा था
मैं एक नहीं थी—दो थी
एक समूची ब्याही और एक समूची कँवारी···
तेरे भोग की खातिर—
मुझे उस कँवारी को कत्ल करना था
मैंने कत्ल किया था—
यह कत्ल, जो कानूनन जायज़ होते हैं,
सिर्फ उनकी ज़िल्लत नाजायज़ होती है।
और मैंने उस ज़िल्लत का ज़हर पिया था।
फिर सुबह के वक़्त—
एक खून में भीगे अपने हाथ देखे थे,
हाथ धोये थे—
बिलकुल उस तरह ज्यों और गँदले अंग धोने थे।
पर ज्योंही मैं शीशे के सामने आई
वह सामने खड़ी थी
वही, जो अपनी तरफ से मैंने रात कत्ल की थी
ओ खुदाया!
क्या सेज का अँधेरा बहुत गाढ़ा था?
मैंने किसे कत्ल करना था और किसे कत्ल कर बैठी

ज़रावकतर

मैं दोस्ती दा जरावकतर पहन लीता है
ते मेरे बदन नूं हुण कुझ नहीं छोहंदा
ना दुश्मन दा हत्थ छोंहदा है।
ना मेरे दोस्त दीआं बाहवां छोह दीआं।
मैं दोस्ती दा जरावकतर पहन लीता है।
मैं खुश हां सिर्फ इह क्यों पुछदे हो मैनूं
कि कुझ गुनीया एनीया उदास क्यों हुंदीया ?·
हुणे कुझ उडदीआं चिड़ीआं
मेरे मत्थे ते बैठ गईआं सन
शायद जरावकतर नूं—
इक रुख दी हरिआवल समझ के
पर लोहे दे पत्तीआं नूं चुझ मारके—
उह हुणे चिचलाईआं सन,
ते मेरे मत्थे तों उड गईआं हन।
भल्लीयां चिड़ीयां···
जरावकतर वी भला कदे चिड़ीआं तों डरदा है ?
पर शायद कोई चुंझ उन्हां मास ते वी मारी सी
मेरे मत्थे दा मास कुझ पीड़ जिहा करदा है
वक्त ने अज गले विचों—हर कपड़ा उतार दित्ता है
कुल तिन जोड़े ही सन—
इक भूत दा, इक वर्तमान दा, ते इक भविँख दा

ज़राबकतर

मैंने दोस्ती का ज़राबकतर पहन लिया है
और नगे वदन को अब कुछ नही छूता
न दुश्मन का हाथ छूता है
न मेरे दोस्त की बाँहें
मैंने दोस्ती का ज़राबकतर पहन लिया है
मैं खुश हूं, पर आपको क्यों पूछते हैं
कि कुछ खुशियाँ इतनी उदास क्यो होती है ?
अभी कुछ उड़ती चिड़ियाँ
मेरे माथे पर बैठ गई थी
शायद ज़राबकतर को—
एक पेड़ की हरियाली समझ कर
पर लोहे के पत्तों को चोंच मारकर
वे अभी चिचियाई थी,
और मेरे माथे से उड़ गई हैं।
बावरी चिड़ियाँ ··

७१.०८

और शायद तीनों ही जोड़े बहुत मैले थे
और नंगा वक़्त अब कोने में खड़ा
कुछ लजाया सा लगता है
या उसकी नंगी पीठ पर यह जो कुछ सिसकता है
यह मेरी आँखों का अक्स है ?
या उसने अपनी नहीं मेरी नग्नता को पिया है ?
पर मैं—मैं तो इस समय नग्न नहीं
मैंने दोस्ती का जरावकतर पहन लिया है…

मेरा पता

अज्ज मैं आपणे घर दा नम्बर मिटाइआ है
ते गली दे मत्थे ते लग्गा गली दा नांउं हटाइआ है
ते हर सड़क दी दिशा दा नाउं पूंझ दित्ता है
पर जे तुसां मैनूं ज़रूर लभणा है
तां हर देश दे, हर शहर दी, हर गली दा बूहा ठकोरो
इह इक सराप है, इक वर है
ते जित्थे वी सुतंतर रूह दी झलक पवे
—समझणा उह मेरा घर है।

मेरा पता

आज मैंने अपने घर का नम्बर मिटाया है
और गली के माथे पर लगा गली का नाम हटाया है
और हर सड़क की दिशा का नाम पोंछ दिया है
पर अगर आपने मुझे जरूर पाना है
तो हर देश के, हर शहर की, हर गली का द्वार खटखटाओ
यह एक शाप है, एक वर है
और जहाँ भी आजाद रूह की झलक पड़े
—समझना वह मेरा घर है।

स्टिल लाइफ

इह जलिआं वाला—
ते उस दी कंध विच, चुपचाप बैठे गोलीआं दे छेक।
इह साइबेरिया—
ते उसदी ज़मीन 'ते चीकां दे टुकड़े बर्फ़ विच जम्मे।
कान्सन्ट्रेशन कैम्प—
मनुक्खी मास दी हवाड़ भट्ठीआं दी राख विच सुती।
इह करागुयेवाच—
जिहदी कुल वस्सों, इक पत्थर दे बुत विच सिमटी।
इह हीरोशिमा है—
जो इक गुट्ठे इक पाटे होये दस्तावेज़ वाग डिग्गा।
ते इह प्राग—
जो साह घुट्ट के अज संसार दी पीडी मुट्ठ विच बैठा।
हर चीज़ चुप ते अडोल है
सिर्फ़ मेरी छाती दे विचों इक उक्भा साह निकलदा
ते धरती दा हर टुकड़ा हिल्ल जिहा जांदा···

स्टिल लाइफ

यह जलियाँवाला—
और उसकी दीवार में चुपके से बैठे गोलियों के छेद
यह सायबेरिया—
और उसकी ज़मीन पर चीखों के टुकड़े बर्फ़ में जमे
कान्सेन्ट्रेशन कैम्प—
इन्सानी मांस की गन्ध भट्टियों की राख में सोई
यह करागुयेवाच—
जिसकी कुल आबादी एक पत्थर के बुत में सिमटी
यह हीरोशिमा है—
जो एक कोने में एक फटे हुए दस्तावेज़ की तरह पड़ा है
और यह प्राग—
जो साँस रोके आज संसर की मुट्ठी में बैठा है।
हर चीज़ चुप और अडोल है
सिर्फ़ मेरी छाती मे से एक गहरा साँस निकलता है
और धरती का हर टुकड़ा हिल-सा जाता

हर सवाल वणिआ सी जवाब दे आधार 'ते
हर जवाब वणिआ सी सवाल दे आधार 'ते
आधार अज लभदा नहीं
ते इस लई धरती दे उत्ते—
हर सवाल उलटा खड़ा अज सीस आसन ला रिहा
—प्राणायाम कर रिहा ।

८

हर सवाल बना था जवाब के आधार पर
हर जवाब बना था सवाल के आधार पर
आधार अब मिलता नहीं।
और इसलिए धरती के ऊपर—
हर श्वास उल्टा खड़ा अब शीर्षासन कर रहा है
—प्राणायाम कर रहा है।

मार्तिन लूथर किंग

तेरी बात सोई है
मैं उस दे कंव दे हत्थां
सुजीआं अक्खां
ते नीलिआं होठां दी गल्ल नही करदी
सिर्फ इह—
कि उसदी लाश नूं नुहाण लग्गिआं मैं वेखिआ
कि उस दे गर्भ विच इक नज़म सी···

मार्तिन लूथर किंग

मेरी मां मर गई है
मैं उसके कांपते हाथों
मुड़ी हुई आंखों
और सीने से होंठों की बात नहीं कहती
सिर्फ यह—
कि उसकी खाल को सहलाते हुए देखा
कि उसके गर्भ में एक मरम थी—

काज़ान ज़ाकिस

मैं जिन्दगी नू इश्क कीता सी
पर जिन्दगी इक वेश्वा की तरहा
मेरे इश्क 'ते हसदी रही
ते मैं उदास इक नामुराद आशक
सोचां दे विच घुलदा रिहा ··
पर जदों इस वेश्वा दा हासा
मैं कागज़ 'ते उतारिआ
तां हर अरार दे विच्चों इक चीस निकली
ते खुदा दा आसन किन्ना ही चिर हिलदा रिहा· ·

काज़ान ज़ाकिस

मैंने ज़िन्दगी को इश्क़ किया था
पर ज़िन्दगी एक वेश्या की तरह
मेरे इश्क़ पर हँसती रही
और मैं उदास एक नामुराद आशिक़
गलियों में घूमता रहा
पर जब इस वेश्या की हँसी
मैंने कागज़ पर उतारी
तो हर अक्षर के गले से एक चीख निकली
और खुदा का तख्त कितनी ही देर हिलता रहा

ज्यां जैने

इक खड्ड वरगी मुल्क सी
ते लोक आखदे कि खड्डां 'चों बाहर आउणा ग़ैरकानूनी
सो उन्हां दे कानून दी राखी लई
मैं मुड़के खड्ड विच डिग्गणा सी।
बहुत लब्भी
पर पहली खड्ड किते ना लब्भी
सो जिहड़ी वी लब्भी, मैं छाल मार दित्ती
पर फेर वी इह पुलिस मेरे पिछे क्यों पई है ?

ज्यां जैने

एक खाई जैसी कोख थी
लोग कहते थे कि खाइयों से बाहर आना ग़ैरकानूनी है
सो उनके कानून की रक्षा कीजिए
मैंने फिर से खाई में गिरना था।
बहुत ढूँढ़ी—
पर यह पहली खाई कहीं न मिली
सो जो भी मिली—मैं उसी में कूद पड़ा
पर फिर भी यह पुलिस मेरे पीछे क्यों लगी है

इमरोज़ चित्रकार

मेरे सामणे—ईज़ल दे उत्ते, इक कैनवस पई है
कुझ इज जापदा—
कि कैनवस ते लग्गा रंग दा टोटा
इक लाल टाकी बण के हिलदा है
ते हर इन्सान दे अन्दर दा पशू
इक सिंग चुकदा है।
सिंग तणदा है—
ते हर कूचा गली बाज़ार इक 'रिंग' बणदा है
ते मेरीआं पंजाबी रंगां विच इक स्पेनी रवायत खौलदी
गोया दी मिथ—बुल फाइटिंग—टिल डॅथ…

सोभासिंह चित्रकार

हनेरे दे समुन्दर विच मैं जाल पाइआ सी
कुझ किरनां—कुझ मच्छीआं—पकड़न लई
कि जाल विच पूरे दा पूरा सूरज आ गिआ
ते जिसदे वज़न सदका—
हुण जाल वी डुबदा पिआ ते मेरी बांह वी···

सोभासिंह चित्रकार

अन्धेरे के सागर में मैंने जाल डाला था
कुछ किरणें कुछ मछलियाँ पकड़ने के लिए
कि जाल में पूरे का पूरा सूरज आ गया
और जिसके वज़न से—
अब जाल भी है डूब रहा और मेरी बाँह भी···

हैनरी मिलर

वर्तमान इक उगे होए अंडे दे वांग है
लोक इस नू गेरदे ते वहगदे
फेर झटे भुलादे, ते आहदे—
कि इस अंडे दे विच्चों भविख दा चूचा जरूर निकलेगा
इह वी इक वल्ल है,
ते मैंनू रोज लिख के पुछदे हन—
कि इहदे विच हस्सण दी किहड़ी गल्ल है ?

हैनरी मिलर

वर्तमान एक उबले हुए अंडे की तरह है
लोग इसे देखते और बहस करते हैं
फिर अंडे भुनाते हैं और कहते हैं—
कि इस अंडे से भविष्य का चूजा जरूर निकलेगा,
यह हमारी आदत है !
और रोज़ खीझकर पूछते हैं—
कि इसमें हँसने की कौनसी बात है ?

अमृता प्रीतम

इक दर्द सी—
जो सिगरट दी तरहां मैं चुपचाप पीता है
सिर्फ कुझ नजमां हन—
जो सिगरट दे नालों मैं रास वांगण झाड़ीआं…

अमृता प्रीतम

एक दर्द था—
जो सिगरेट की तरह मैंने चुपचाप पिया है
सिर्फ़ कुछ नज़्में हैं—
जो सिगरेट से मैंने राख की तरह झाड़ी हैं।

इक दृष्टिकोण

सूरज नू सारे खून माफ हन।
दुनीआं दे हर इन्सान दा उह रोज 'इक दिन' कतल करदा है
ते हर इक उम्र दा इक टुकड़ा रो जिबाह हुंदा है
इन्सान दे अखतिआर सिर्फ एना है—
कि जिबाह होय टुकड़े नूं उह घबरा के सुट देवे, ते डरे,
जां निडर उस नूं कबाब वांग भुन्ने, खावे,
ते साहवां दी शराब पीदां उह अगले टुकड़े दी उडीक करे…

एक दृष्टिकोण

सूरज को सारे खून माफ हैं।
दुनिया के हर इन्सान का वह रोज 'एक दिन' कतल करता है
और हर एक उम्र का एक टुकड़ा रोज जिबह होता है
इन्सान के इख्तियार में सिर्फ इतना है—
कि जिबह हुए टुकड़े को वह घबरा के फेंक दे, और डरे,
या निडर उसे कबाब की तरह भूने, खाये
और साँसों की शराब पीता वह अगले टुकड़े की इन्तज़ार करे···

आत्ममिलन

मेरी सेज हाज़र है
पर जुत्ती ते कमीज़ वांगण
तूं अपणा बदन वी उतार देह
परां मूढ़े 'ते रख देह
कोई खास गल्ल नही
इह आपणे आपणे देस दा रिवाज है।

आत्ममिलन

मेरी सेज हाजिर है
पर जूते और कमीज की तरह
तू अपना बदन भी उतार दे
उधर मूढ़े पर रख दे
कोई खास बात नहीं—
यह अपने अपने देश का रिवाज है।

विश्वास

इक अफवाह बड़ी काली
इक चामचिड़ वांग मेरे कमरे 'च आई है
कंधां नू टकरां मारदी
ते खुड्डां मारीआं ते सुरंग लभदी
पर अखां दिआ कालीआं गलीआं
मैं हत्था दे नाल ढक लइआं हन
ते तेरे इश्क़ दा मैं कन्ना 'च रू दे लिआ है ।

विश्वा

एक अफ़वाह बड़ी काली
एक चमगादड़ की तरह मेरे कमरे में आई है
दीवारों से टकराती
और दरारें, सुराख़ और सुरंग ढूंढ़ती
पर आँखों की काली गलियाँ
मैंने हाथों से ढक ली हैं
और तेरे इश्क़ की मैंने कानों में रुई लगा ली है।

राजनीति

सुणीग्रा है कि राजनीति इक क्लासिक है ।
हीरो : वहुमुखी प्रतिभा दा मालिक—रोज़ ग्रपणा नाम वदलदा
हीरोइन : हकूमत दी कुरसी—उही रहंदी है
एक्सट्रा : राजसभा ते लोकसभा दे मेंबर
फाइनांसर : दिहाड़ीदार मजदूर, कामे, ते किसान
(फाइनांस करदे नही, करवाये जांदे हन)
संसद : इनडोर शूटिंग दा स्थान
ग्रखवारां : ग्राउटडोर शूटिंग दा साधन
इह फिल्म मैं वेखी नही, सिर्फ सुणी है
क्योंकि सैंसर दा कहिणा है—"नाट फार ग्रडल्ट्स ।"

राजनीति

सुना है राजनीति एक क्लासिक फिल्म है
हीरो : बहुमुखी प्रतिभा का मालिक रोज़ अपना नाम बदलता
हीरोइन : हकूमत की कुर्सी वही रहती है
ऐक्स्ट्रा : राजसभा और लोकसभा के मैम्बर
फाइनांसर : दिहाड़ी के मजदूर, और खेतिहर
(फाइनांस करते नहीं, करवाये जाते हैं)
संसद : इनडोर शूटिंग का स्थान
अखबार : आउटडोर शूटिंग के साधन
यह फिल्म मैंने देखी नहीं सिर्फ सुनी है
क्योंकि सैन्सर का कहना है—"नाट फार अडल्ट्स।"

धरती—ग्रत सुन्दर किताब
चन सूरज दी जिल्द वाली
पर खुदाईग्रा ! इह भुख, नंग, सहिम ते गुलामी
इह तेरी इबारत है ?
—जां प्रूफां दीग्रां गलतीग्रां ?

?

धरती—ग्रति सुन्दर किताब
चाँद सूरज की जिल्द वाली
पर खुदाया ! यह दुख, भूख, सहम ग्रौर गुलामी
यह तेरी इबारत है ?
—या प्रूफों की गल्तियाँ ?

राज सत्ता

एक कारखाना जग का
रोज़ चिमनी में से आहों, और चीखों का धुआँ निकलता
राज सत्ता इसी कारखाने में तैयार होती है
लोग—मांस की गठरियाँ—सिर्फ कच्चा माल हैं
जो राजनीति के व्यापारी समय से खरीदते
और कारखाने की भट्टी पर सेकते
ईश्वर : मांस की गठरियों का सिर्फ एक आढ़ती।

भाषण

लफ्ज़ जदों सोचां तो तलाक लैंदे हन
बाजार विच इक मंच उत्ते
उह माइक रख के बैठ जांदे हन।
जनता दीआं मंगा—कुआंरीआं धीआं
उह तकदे झांकदे
ते आशकाना भ्रदा 'च मुसकरांदे हन
पर इन्हां बच्चीआं नूं डरना जां झकणां नहीं चाहीदा
ते ना कोई आस बंनणीं चाहीदी
क्योंकि इह लफ्ज़ वी ते इन्हां नूं उचारदे इह होठ वी
—सभ… होमो…हन…

भाषण

लफ्ज़ जब सोचों से तलाक लेते हैं
बाज़ार में एक मंच पर
वह माईक रखकर बैठ जाते है।
जनता की माँगें—कँवारी बेटियाँ
वे ताकते-झाँकते
और आशिकाना अदा में मुसकराते हैं
पर इन बच्चियों को डरना या झिझकना न चाहिए
और न कोई आस बाँधनी चाहिए
क्योंकि यह शब्द भी, और उन्हें उच्चारते यह होंठ भी
—सब…होमो…हैं…

बस्ती

असी—धंघ, धुंआं, मच्छर, मक्खीआं, ते जुआं
ते कूड़े दा ढेर, ते हड्डीआं दे पिंजर
सारे प्रोटैस्ट करदे हां
ते दसदे हां कि सानू इह बसती अलाट होई है
कुझ सुपनीआं ने रात नूं झुग्गीआं बणाईआं हन
इह झुग्गीआं उठाओ, क्योंकि इह 'अनआथोराइज्ड' हन

बस्ती

हम, खांसी, धुआं, मच्छर, मक्खियां और जुएँ
और कूड़े का ढेर, और हड्डियों के पिंजर
सब प्रोटेस्ट करते हैं
और बताते हैं हमें यह बस्ती अलाट हुई है
कुछ सपनों ने रात को झुग्गियां बनाई हैं
यह झुग्गियां उठाओ क्योंकि यह 'अनआथोराइज्ड' हैं।

डेढ़ घंटे दी मुलाकात

डेढ़ घंटे दी मुलाकात
ज्यों बदल दा इक टोटा
अज सूरज दे नाल टंकिआ,
उधेड़ सकदी हां,
पर कुझ नहीं बणदा, ते जापदा—
कि सूरज दे लाल झग्गे विच
इक बदल किसे उणिआ है।

डेढ़ घंटे दी मुलाकात
अज साहमणे उस चौक विच
इक सन्तरी वांग खड़ी
ते मेरीआं सोचा दा लांघा
उस हत्थ दे के रोक दित्ता है
जाणे खुदा कि मैं की आखीआ सी
ते जाणे खुदा तूं की सुणीआ है

डेढ़ घंटे दी मुलाकात
सोचदी हां आदिवासी औरत दी तरहां
मैं इक चिलम बाल लां
ते डेढ़ घंटे दा तम्बाकू
इक अग्ग दे विच रखके मैं पी लवां

डेढ़ घन्टे की मुलाकात

डेढ़ घन्टे की मुलाकात
जैसे बादल का एक टुकड़ा
आज सूरज के साथ टांका,
उधेड़ हारी हूँ
पर कुछ नही बनता, और लगता है—
कि सूरज के लाल कुर्ते में
यह बादल किसी ने बुन दिया है।

डेढ़ घन्टे की मुलाकात
सामने उस चौक में
एक सन्तरी की तरह खड़ी
और मेरी सोचों का गुज़रना
उसने हाथ देकर रोक दिया
जाने खुदा मैंने क्या कहा था
और जाने खुदा तूने क्या सुन लिया।

डेढ़ घन्टे की मुलाकात
सोचती हूँ आधी बासी औरत की तरह
मैं एक चिलम सुलगा लूं
और डेढ़ घन्टे का तम्बाकू
इस आग मे रखकर पी लूँ

ते गगन भाड़ पाट जावे
एस तों पहलां कि धरत नूं सांहुदीयां
इह सूरज ही पाट जावे
एस तों पहलां कि मुलाकात दा मेला
इक मातम 'च बदल जावे

इक पर्दे दा धुंआ
मुझ मैं भी मरां मुझ चीज भी मरे
एस तों पहलां कि इस दा हरफ
मेरी जां मेरी जबान 'ते मारे
एस तों पहलां कि मेरा जां तेरा मन
इस दे जिकर नूं गुणे

ते एस तों पहलां कि मर्द
औरत जात दी तोहीन बण जावे
ते एस तों पहलां कि औरत
मर्द जात दी हत्तक दा कारन बणे
एस तों पहलां···एस तों पहलां···

इससे पहले कि मेरी सोच घबराये
और ग़लत मोड़ पर मुड़ जाये
इससे पहले कि बादल को उतारते
यह सूरज टूट जाये
इससे पहले कि मुलाकात की याद
एक नफरत में बदल जाये

डेढ़ घन्टे का धुआँ
कुछ मैं पी लूं कुछ पवन पी ले
इससे पहले कि इसका लफ्ज़
मेरी या तेरी जबान पर आये
इससे पहले कि मेरा या तेरा कान
इसके जिक्र को सुने

और इससे पहले कि मर्द—
औरत जात की तौहीन बन जाये
और इससे पहले कि औरत—
मर्द जात की हतक का कारण बने
इससे पहले ··इससे पहले···

हैंग ओवर

अज अखबारां दीआं सतरां—
अज खाली बोतलां दी तरहां डहिक रहीआं हन।
मेरा संघ गुजदा पिआ
ते सारी जान इंज किरदी पई
जिउं अस रात पीते सुपनीआं दा हैंगओवर है···

हैंग ओवर

सब अखबारों की कतरनें—
आज खाली बोतलों की तरह औंधी पड़ी है।
मेरा गला सूख रहा है
और सारी देह इस तरह टूट रही है
जैसे कल रात पिये सपनों का हैंगओवर है ··

बंगला देश : दो कविताएं

: १ :

अज इक दसतरखान ते है जिन्दगी दी दावत
ते इक दसतरखान ते है मौत दी दावत
सत्ता दी इको शर्त है
सिआसत दा इको हुक्म
कि मुअजज़ मेहमानो ! शौक फरमाओ !
जिन्दगी दे दस्तरखान नू सजाओ।
पर पहला निवाला मौत दे हत्थों !
ते पहला पिआला मौत दे हत्थों।

: २ :

अज दी खबर—
कि सानूं इस धरती दे उत्ते
इक तलिसमी खड्ड लभी है…
अज जो वी जहाज़ बारूद दा भरीआ
इस खड्ड तों लंघदा
उह खड्ड तों सलामत लंघ जांदा है
पर जो वी जहाज़ चौलां दा भरीआ
इस खड्ड तों लंघदा
इह खड्ड दे विच डिग पैंदा है।

बंगला देश : दो कविताएं

: १ :

आज एक दस्तरखान पर है ज़िन्दगी की दावत
और एक दस्तरखान पर है मौत की दावत
सत्ता की एक शर्त है
सियासत का एक हुक्म
कि मोअज्जिज मेहमानो शौक फरमाइए !
और ज़िन्दगी के दस्तरख़ान को सजाइए !
पर पहला निवाला मौत के हाथों !
और पहला प्याला मौत के हाथों !

: २ :

आज की खबर—
कि हमने इस धरती पर
एक तिलस्मी खाई ढूंढी है
जो भी जहाज़ बारूद से भरा
इस खाई पर से गुज़रता है
वह खाई से सलामत गुजर जाता है,
और जो भी जहाज़ चीखों से भरा
इस खाई पर से गुज़रता है
वह इसी खाई में गिर जाता है…

ज़िन्दगी

छे कदम पूरे ते इक मदा
जेल दी इक कोठड़ी
कि बन्दा बैठ उठ सके
ते निढाल वी हो लवे।

'रब्ब' दी इक बही रोटी
'सब्र' दा वक्कल सलूणा
चाहवें तां रज पुजके
उह दोवें डंग खा लवे।

ते जेल दे हाते दी गुट्ठे
इक छप्पड़ 'शान' दा
कि बन्दा हत्थ मुंह धोवे
(ते कुझ मच्छर नतार के)
उह बुक भरके पी लवे

रूह दा इक जखम
बड़ा आम रोग है

जखम दे नंगेज तों
जे बहुत शर्म आवे

जिन्दगी

छः कदम पूरे और एक आधा
जेल की एक कोठरी
कि इन्सान बैठ-उठ सके
और आराम से सो भी सके।

'ईश्वर' एक बासी रोटी
'सब्र' अधपका सालन
चाहे तो जी भरकर
वह दोनों जून खा ले।

और जेल के अहाते में
एक जोहड़ 'ज्ञान' का
कि इन्सान हाथ-मुंह धो
(और कुछ मच्छर छानकर
वह अंजुली भर पी ले।

रूह का एक जख्म
एक आम रोग है।

जख्म की नग्नता से
जो बहुत शर्म आये

तो सपने का टुकड़ा फाड़कर
उस ज़ख्म को ढाँप ले।

इस जेल की यह बात
कोई कभी न करता
और कोई कभी न कहता
कि दुनिया की हर बगावत
एक ज्वर की तरह चढ़ती
ज्वर चढ़ते और उतर जाते—

अगर कभी इन्सान को
आशा का कैंसर न होता…

तमग़े

बहादुर लोग मेरे देस दे
बहादुर लोग तेरे देस दे
इह सारे मरन मारन जाणदे
सिरां नू वारन जाणदे
सिर्फ़ इक गल्ल वसरी है—
कि सिर कदे आपणा नहीं हुंदा।

इन्सान दी इक लाश हुंदी है
पर खुदा दी लाश नहीं हुंदी
ते जदों वी इन्सान विचले
रब्ब दा टुकड़ा मरे
उस दी कदे बदबू नहीं अउंदी

महबूब किसे दा कोई नहीं
बिलकुल रकीब दा खतरा नहीं
ते ना ही खतरा किसे दर्द दा
सिर्फ़ जिहड़ी लीक वड्डी है

उह इहनां दा अपमान करदी है
इह लीक मेट दे, कि लीक ज
सरबत्त दे मेचे नहीं अउंदी

तमग़े

बहादुर लोग मेरे देश के
बहादुर लोग तेरे देश के
यह सभी मरना-मारना जानते हैं
सिरों को वारना जानते हैं
सिर्फ यह बात और है—
कि सिर कभी अपना नही होता

इन्सान की एक लाश होती है
पर खुदा की लाश नही होती
और जब भी इन्सान के भीतरी
खुदा का टुकड़ा मरे
उसकी कभी बदबू नही आती।

महबूब किसी का कोई नही
बिल्कुल रक़ीब का खतरा नहीं
और न ही खतरा किसी दर्द का

सिर्फ जो लकीर बड़ी है
वह इनका अपमान करती है
यह लकीर को मिटाते, कि लकीर
सबके नाप की नहीं होती

जो सारी जिन्द दी निशिचन है
ते सारा जहान दी निशिचन है

गगन मुसकरा रिहा है—
ते इन्हां दी छाती ते ला रिहा है
निशुंगक बहादुरी दे कई तमगे…

सो पूरी विजय में निर्विघ्न है
श्रौर पूरा जशन भी निर्विघ्न है

वक़्त मुस्करा रहा है—
श्रौर इनकी छाती पर लगा रहा है
नपुंसक बहादुरी के कई तमग़े···

इक सोच

भारत दीआं गलीआं विच भटकदी हवा
चुल्हे दी बुझदी अग्ग फोलदी
हुदारे अन्न दी इक बुरकी तोड़दी
ते गोडीआं 'ते हत्थ रख के फेर उठदी है…

चीन दे पीले ते ज़र्द होठां दे फलहे
अज विलक के इक वाज देदे हन
उह जांदी ते हर इक संघ विच सुकदी
ते फेर चीक मारके उह वीअतनाम विच डिगदी है…

मसाण घरां 'चों बड़ीआं हवाड़ा औदीआं
ते समुन्दरों पार बैठे—मसाण घरां दे वारिस
वारुद दी हवाड़ नू शराब दी हवाड़ विच भिउंदे हन।

बिल्कुल उस तरहा, जिस तरहां—
कि मसाण घरां दे दूसरे वारिस
भुक्ख दी हवाड़ नू तकदीर दी हवाड़ विच भिउदे हन
ते सोका दे दुख दी हवाड़ नू
तकरीर दी हवाड़ विच भिउदे हन।

ते दजलादल दी गजरी मिट्टी
जा पुराणी रेत थल दी जो मट्ठ विच भिजदी है
ते जिस दी हवाड़—मासमशाह शहादत दे जाम विच डुबदी है

एक सोच

। गलियों में भटकती हवा
बुझती आग को कुरेदती
ए अन्न का एक ग्रास तोड़ती
नों पे हाथ रख के फिर उठती है···

न के पीले श्री ज़र्द होंठों के छाले
ज खिलखिला कर एक आवाज़ देते हैं
ह जाती और हर एक गले में सूखती
और चीख मारकर वह पीपतनाम में गिरती है···

शमशान घरों में से एक गन्ध सी आती
और सागर पार बैठे—श्मशान घरों के वारिस
बारूद की इस गन्ध को शराब की गन्ध में भिगोते हैं।

बिल्कुल उस तरह, जिस तरह—
कि श्मशान घरों के दूसरे वारिस
भूख की एक गन्ध को तकदीर की गन्ध में भिगोते हैं
और लोगों के दुखों की गन्ध को—
तकदीर की गन्ध में भिगोते हैं।

और हड़ताल की नई सी भाटी
या पुरानी रेल पटरी की ...
और ज़िन्दगी ...

छाती दीग्रां गलीग्रां विच भटकदी हवा
इह सभे हवाड़ा सुंघदी ते सोचदी—
कि धरती दे घरों सूतक दी महक कदों आवेगी ?
कोई इड़ा—किसे मत्थे दी नाड़
—कदों गर्भवती होवेगी
गुलाबी मास दा सुपना—
अज सदीग्रां दे ज्ञान तो वीर्य दी बूंद मंगदा…

छाती की गलियों में भटकती हवा
यह सभी गन्धें सूंघती और सोचती—
कि धरती के आंगन से सूतक की महक कब आयेगी ?
कोई इड़ा—किसी माथे की नाड़ी
—कब गर्भवती होगी ?
गुलाबी मांस का सपना—
आज सदियों के ज्ञान से वीर्य की बूंद मांगता…

शहर

मिरा शहर इक लम्बी बहिस वरगा है
सड़कां—बेतुकीग्रां दलीलां दी तरह
ते गलीग्रां इस तरह—
जिउं इको गल्ल नूं कोई इधर घसीटदा कोई उधर

हर मकान इक मुठ वांगु वटीग्रा होईग्रा
कंधां कची चीग्रां वांगु
ते नालीग्रां, जिउं मूहां 'चो झग वगदी है

एह बहिस सौरे सूरज तों शुरू होई सी
जु उस नू वेख के होर गरम हुंदी
ते हर बूहे दे मुह 'चो—
फिर साइकलां 'ते सकूटरां दे पहिए
गाहलां दी तरह निकलदे
ते घटीग्रा ते हार्न इक दूजे 'ते झपटदे

जिहड़ा वी बाल इस शहर विच जमदा
पुछदा कि किहड़ी गल्ल तों एह बहिस हो रही ?
फिर उसदा जवाब ही इक बहिस बणदा
बहिस विचों निकलदा बहिस विच रलदा

शहर

मेरा शहर एक लम्बी बहस की तरह
सड़कें—बेतुकी दलीलों सी
और गलियाँ इस तरह—
जैसे एक बात को कोई इधर घसीटे कोई उधर

हर मकान एक मुट्ठी सा भिचा हुआ
दीवारें…किचकिचाती सी
और नालियाँ, ज्यों मुंह से झाग बहती है

यह बहस जाने सूरज से शुरू हुई थी
जो उसे देखकर यह और गरमाती
और हर द्वार के मुंह से
फिर साइकिलों और स्कूटरों के पहिए
गालियों की तरह निकलते
और घंटियाँ हार्न एक दूसरे पर झपटते

जो भी बच्चा इस शहर मे जनमता
पूछता कि किस बात पर ? यह बहस हो रही है ?
फिर उसका प्रश्न भी एक बहस बनता
बहस से निकलता बहस में मिलता

संखा घड़िआलां.दे साह सुक्के
रात अउंदी, सिर खपांदी ते चली जांदी
पर नींदर दे विचवी इह बहिस न मुक्के
मिरा शहर इक लम्बी बहिस वरगा है…

शंख घंटों के श्वास सूखे
रात आती, सिर पटकती और चली जाती
पर नींद में भी बहस खत्म न होती
मेरा शहर एक लम्बी बहस की तरह...

इक खत

मैं—इक परछत्ती 'ते पई पुस्तक ।
शायद गाथ-वचन हां, जां भजन माला हां,
जां काम सूत्र दा इक कांड,
जो कुझ मारण 'ते गुप्त रोगां दे टोटके,
पर जापदा—मैं इन्हां विचों कुझ वी नहीं ।
(कुझ हुंदी तां जरूर कोई पढ़दा)

ते जापदा इक क्रान्तिकारीआं दी सभा होई सी
ते सभा विच जो मता पास होईआ सी
मैं उसे दी इक हथ लिखतकापी हां ।
ते फेर उत्तों पुलिस दा छापा
ते कुझ पास होईआ सी, कदे लागू न होईआ
सिर्फ 'कारवाई' खातर सांभ के रखिआ गिआ ।

ते हुण सिर्फ कुझ चिड़ीआं अउंदीआं
चुझ विच तीले लिअउंदीआं
ते मेरे बदन उत्ते बैठ के
उह दूसरी पीढ़ी दा फिकर करदीआं ।
(दूसरी पीढी दा फिकर किन्ना हसीन फिकर है) !
पर किसे उपराले लई चिड़िआं दे खम्ब हुंदे हन
ते किसे मते दा कोई खम्ब नहीं हुंदा ।
(जां किसे मते दी कोई दूसरी पीढ़ी नही हुंदी ?

इन्दिरा जी

अज इक रात—
सूरज नू लभण तुरी है ··
मैं इकल्ली इक दुआ बण के—
इस राह उत्ते खड़ी सां
कि घड़ी कु मेरे मत्थे दी अग्ग सेक के
उह हनेरे दा गुनाह् वहशे !
इह किहा चमत्कार है !
कि करोड़ां हत्थ उठे हन
ते उन्हां मेरे नाल रल के इह दुआ मंगी है !
अज इक रात मेरे अंगां 'चों लंघी है···
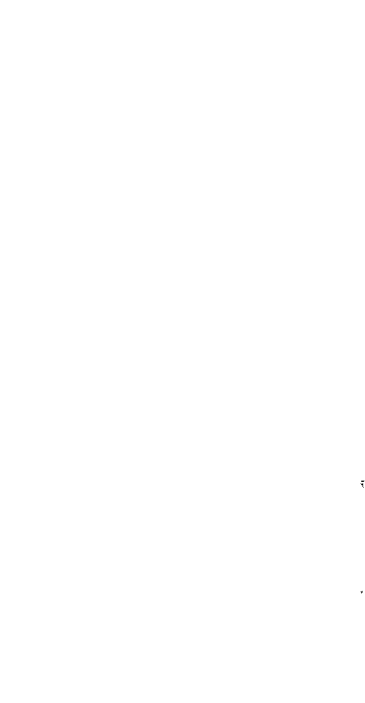
अक्खर

इक पत्थरां दा नगर सी—
सूरज वंश दे पत्थर
ते चन्द्र वंश दे पत्थर
उस नगर विच रहंदे सन···

ते कहंदे सन—
कि जुलमी राजिआ दा राज सी
ना राजिआं दे कन सन
ना प्रजा दी 'वाज' सी

ते ताहीउं—
उह लोक जद रोये सन
पत्थर दे होय सन

पत्थर दे देवता
पत्थर दे पुजारी
ते वसल श्रंग न छोंहदा
ते विरहा भंग न हुंदा···

ते पत्थरां दे नगर विच
सूरज दा घोड़ा हिणकदा

पत्थरां ते पैर पटकदा
नग्नां दे हाथी निगाड़दे
पत्थरां नूं पैरां उखाड़दे
गाती दा हौंग मूरदा
पत्थरां ते कुहाड़ी मारदा
ते उन्हां हाकमां दे हुक्म
दका डर गो पुगानी ··

ते पत्थर शहम के वहिंदे
जद दिनां दी गुट्टं
ता छानां दे हुग्ग वाग
कोई तीमा फुल पतर
जा सावें घाह दा तीला
इक पत्थर 'चों फुट्ट
जिऊं कंप के इक रिखी दी
तपस्या टुट्टे ··

जिन्द बुझदी ते जगदी सी
ते इंज—पत्थरा दे नगर विच
पत्थरा दी वश वधदी सी···

इक सी शिला
ते इक सी पत्थर
ते उन्हां दा उस नगर विच
संजोग लिखीआ सी—
ते उन्हा ने रल के
इक वरजत फल चखिआ सी
मैं हाले वी बैठा
ता इक ख्याल अउंदा है
कि मैं वी जे हुंदी इक हरी पत्ती

उन्हां दे पिंडे दा हउका—
इक मासी अरंगत
तां उन्हां दी छाती मैनूं नगीच हुंदी,
सूरज दा घोड़ा हिणकदा
बदलां दे हाथी चिंघाड़दे
ते राजा दे गण
ते राजिआं दे हुकम पूगदे
पर उन्हां दे पोहलें
मैं निगल बैठ जानी
ते किंगे—
ममता दी भेड़ विच सुकी रहंदी…
पर उह सारे नकमाक पत्थर सन
जो मैले आसमान दे हेठां
ते मैली धरत दे उत्ते
इक पत्थरां दी सेज ते सुत्ते,
ते पत्थरां दी रगड़ विचों
मैं अग्ग वांग जंमी
—अग्ग दी रुत्ते

पिंडे 'चो अग्ग जंमी
तां पत्थर वी कंबिआ
ते शिला वी कंबी
फेर पिंडे दी अग्ग
उन्हां झोली विच पाई,
ते धुएं दी गुड़ती
अग्ग नूं चटाई
हसे तां हसे
इक पौणा दी दाई
रोये तां रोये
जिहने कुख विचों जाई :

"पत्थरां दी झोली
अग्ग न मेरे
पत्थरां दे ढुग
हुंदे पत्थरां जेडे,
पत्थरां दी जीभें
पत्थरां दे गाने
धमी धरती दे हुगाने
ग्रू पौणां दे हुगाने···"
फेर गुल्न दा मालम
ते उन्हां कुझ ना आखिआ
अंखिआं मीटण तो पहलां
शायद इह वी ना वेखिआ
कि इक जमदी अग्ग ने
इक लंब दा हउका लिआ···

अग्ग ते होठां ते लिसिआ
इक लंबा जिहा हउका
ते अग्ग दे हडां च हुंदा
इक धुआं ही धुआं

इह वगदिआं पौणां
मैंनू जित्थे वी खड़दिआं
तत्तीआं सुआहवां
मेरे पिंडे तो झड़दिआं—
ते रोज मेरी उम्र दा
जिहड़ा वी दिहुं चढ़दा
मैं उस नूं अंग लांदी
तो उहीओ राख हुंदा···
मैं सोचदी—
की धुएं दी लीक वांगु

मत्थे दी लीक कवदी है ?
की मांवा दी कुख विचों
सिविश्रां दी अग्ग जमदी है ?

मैं सिविश्रां दी अग्ग विच जलदी
ते सिविश्रां दी अग्ग वांग वलदी
पर कदे—
नींदर दा हनेरा इस तरह हुंदा
कि सुपनीआ दी नीली
इक लाट जिही निकलदी
ते जापदा—
कि सिविश्रां दी अग्ग,
अग्ग दा अपमान है
ते किसे सोहणी जा ससी
जां हीर विच्च जो अग्ग सी
मैंनूं उस दी पहचाण है ··
ते इक सोच सी अउंदी
कि सिर्फ मड़ीआं दी अग्ग
अग्ग नहीं हुंदी
इह अग्ग दी तौहीन है,
ते जापदा—
कि पत्थरां दे नगर विच
जो वारिस ने अग्ग वाली सी
इह मेरी अग्ग सी
उसे दी जानशीन है···
अग्ग अग्ग दी वारिस···

पर पत्थरां दी नगरी
कोई अग्ग ना पाले
छातीआं दे चुल्हे

कोई अग्ग ना थाने
मतियआं दी भट्ठी
कोई अग्ग ना रोके
ते मेरी जीभ ते उठे
उस अग्ग दे छाले

उह पत्थरां दे नगर वाले—
आंहद ते आंहदे
इस अग्ग नू बुझावो
पावो ते पावो
किसे भोरे विच पावो
देवो ते देवो
नहुं संधी विच देवो
जावो ते जावो
इहनूं नदीए रूड़ावो…

इक पत्थरां दा नगर सी
पत्थरां दे कंडे
ते मां—बाहरी अग्ग दा
कोई सेक ना वंडे…

फर उहीओ हवा
जिहने झोली 'च खिडाइआ
ते जिहने मेरी मां दी
मां दी मां नू जाइआ
कितों दौड़ के आई
ते हत्थां दे विच
कुझ अक्खर लिआई
"इह निक्किआं कालिआं
लीकां ना जाणी

इह सीकां दे गुच्छे
तेरी अग्ग दे हाणी
वेरा ! अक्खरां दा हुंदा
अग्ग दा जेरा,
अग्ग दा जेरा
अग्ग तों वडेरा !"

ते इक तरह कहिंदी
उह लंघ गई अग्गे
"तेरी अग्ग दी उमरा—
इन्हा अक्खरां नू लगे !"

मेरे इतिहास दा इक पात्र (लेनिन दे

तूं—मेरे इतिहास दा किहो जिहा पातर ?

मेरी कंध दे कैलंडर 'चों निकल के
तूं रोज़ उस दी तारीख बदलदा
ते मैंनू इक नवें दिहुं वाग मिलदा ।

कैलंडर चो बाहर आ के—
तू सड़कां 'ते निकल तुरदा है—
तो इक धुप निकल अउंदी है ।
ते जिथे वी जिहड़ी गुठ कूली है ।
उह हरे पत्ती दी तरां हसदी है,
ते जिथे वी जिहड़ी गुठ मैली है
उह शरमसार हुंदी है ।

पर इह—जो तेरा सुभावक है
इतिहास दा असुभावक करम है ।

इतिहास इक सुख दा साह लेंदा है
जद भूतकाल विच बैठदा
ते अंतां दा परेशान हुंदा है
जद वर्तमान नूं नजिठदा

सो इस इतिहास दी खातर—
मैं किन्नी वार तैनूं कैलंडर 'च कैद कीता है
ते उसते देशकाल दी इक मोहर लाई है
ते उसते कई इजमां दे किल ठोके हन।

पर तूं—
मेरी कंध दे कैलंडर 'चों निकल के
फिर उस दी तारीख बदलदा
ते नवीं चिता, नवीं भुकतो, हत्थ विच लैके
तू मैंनूं इक नवें दिहुं वांग मिलदा।

तेरी—इक नवें दिहुं दी—अज़मत
कि मेरी होंद दी इक छांवी गुठ ने
तिरी धुप दा इक बोल सुण लिआ,
ते जो इतिहास दा असुभावक करम है
पर सुभावक है—
उह मेरा सुभावक वण गया···

माता तृप्ता दे नौं सुपने

तृप्ता त्रभक के जागी
लेफ नू सवाहरियां कीता,
सूही संग जिहा पल्ला—
मोडियां ते लीता,

अपने मर्द वल तक्की,
फिर चिट्टे विछोणे दे—
वट वांग भबकी,

ते कहिण लगी !
अज माघ दी राते
मैं नदिए पैर पाया

बड़ी ककरी राते—
इक नदी कोसी सी

गल अण होई
पाणी नूं अंग लाया
तां नदी दुध दी होई

कोई नदी करामाती
मैं दुध विच न्हाती

माता तृप्ता के नौ सपने

तृप्ता चौंक के जागी
लिहाफ़ को संवारा,
लाल लज्जा सा आँचल—
कन्धों पर ओढ़ा

अपने मर्द की तरफ़ देखा
फिर सफ़ेद बिछौने की
सलवट की तरह झिझकी

और कहने लगी :
"आज माघ की रात
मैंने नदी में पैर डाला

बड़ी ठंडी रात में—
एक नदी गुनगुनी थी

हाय अनहोनी,
पानी को मुंह लगाया
नदी दूध की हो गई

कोई नदी कामधेनी
मैं दूध में नहाई

इस तलवंडी इह कही नदी ?
किहा सुपना ?

ते नदी विच चन्न तरदा सी
मैं तली उत्ते चन्न धरिआ
घुट भरिआ

ते नदी दा पाणी—
मेरी रत विच घुलदा पिआ
ते उही चानण—
मेरी कुख विच हिलदा पिआ।

फग्गण दी कटोरी विच
सत रंग घोला
मुखों न बोलां

इह मिट्टी दी देह साकारथी हुंदी
जद वखरी दे विच
कोई माह्लणा पांदा,

इह किहा जप ?
किहा तप ?

कि मावां नूं रब दा दीदार
मुड़ किथों हुंदा···

कच्चे गर्भ दे मरोड़
मेरा भी न सारोड़

बैठी रिड़किणा पाइआ
ते आगे मक्खण हिलिआ

इस तलवंडी में यह कैसी नदी ?
कैसा सपना ?

और नदी में चांद तरता था
मैंने हथेली पर चांद रखा
घूंट भरा

और नदी का पानी—
    मेरे खून में घुलता रहा
और वह प्रकाश
    मेरी कोख में हिलता रहा।

फागुन की कटोरी में
सात रंग घोलूँ
मुख से ना बोलूँ

यह मिट्टी की देह गवाक्षी होती
जब कोख में
    कोख नीड़ बनाता,

यह कैसा जप ?
कैसा तप ?

कि माँ को ईश्वर का दीदार
    कोख में होता…

कच्चे घड़े के भरोसे
मेरा मन न टिके

अपने ये लिए बंदी
जो सदा अकारथ है,

मैं सारी हस्ती गाहदा
तां सुपने दा भेद निखरिआ

इह किहा भोग सी ?
किहा संजोग सी ?

ते क्यों मेनूं
    इह किहा गुमाना ?

मेरे तों मेरी कूक गई
इह गुमनिआं दा फ़साना ।

मेरा जिसा हुनगिआ
ते हिआ हरिआ,

वैसाख दी वाढी
इह कणक सी
छज विच छटण नूं पाई
तां छज तारिआं दा भरिआ

अज भिन्नी रात दा वेला
ते जेठ दे महीने
    इह कही वाज सी ?

ज्यों जलां विचों थलां विचों
इक नाद जिहा उठे
    इह मोह दा—
    ते माया दा गीत सी ?
जां रव दी—
    काइआ दा गीत सी ?

मैंने मटकी में हाथ डाला
तो सूरज का पेड़ा निकला।

यह कैसा भोग था?
कैसा संयोग था?

और चढ़ते चैत—
यह कैसा सपना?

मेरे और मेरी कोख तक—
यह सपनों का फासला।

मेरा जिया हुलसा
और हिया डरा,

बैसाख में बटनेवाली
यह कैसी कनक थी
आज मैं मटकने को डाली
तो आज तारों से भरा…

आज भीनी गन्ध की बेला
और जेठ के महीने—
यह कैसी आवाज थी?

ज्यों जन्म से ही पास में से
एक नाद सा उठे
यह मोह और
माया का गीत था
या ईश्वर की—
करुणा का गीत था?

कोई ऐसी सुगन्ध सी ?
जां मेरी नाभि दी कस्तूरी ?

मैं चहिं चहिं जांदी रही
डरदी रही,
ते एसे भाज दी मेथे
मैं बना किन तुरदी रही…

इह नहीं भाज ?
किहा सुपना ?
किन्ना कु पराया ?
किन्ना कु आपणा ?

मैं इक हरनी—
बउरी जही हुंदी रही,
ते आपणी सुगन्ध नाल
आपणे मन्न लांदी रही

हाड़ दा महीना—
तृप्ता दी अख खुली सुभावके
ज्यों फुल खिड़दा है
ज्यों दिहुं चढ़दा है

"इह जिंद मेरी—
किहड़ियां सरां दा पाणी ?
मैं हुणे ऐथे
इक हंस बहिंदा वेखिम्रा,

इह किहा सुपना ?
कि जाग के वी जापे !

कोई दैवी सुगन्ध थी ?
या मेरी नाभि की गन्ध थी ?

मैं सहम सहम जाती रही
डरती रही,
और इसी आवाज की सीध में
      मैं वनों में चलती रही···

यह कैसी आवाज़
कैसा सपना ?
कितना सा पराया ?
कितना सा अपना ?

मैं एक हिरनी
      बावरी सी होती रही,
और अपनी कोख में
      अपने कान लगाती रही।

असाढ़ का महीना—
स्वाभाविक तृष्णा की प्यास सुन
ज्यों पुन खिलता है
ज्यों दिन चढ़ता है

"यह मेरी ज़िन्दगी
      किन सरोवरों का पानी
मैंने पी ली यह!
एक हस अद्भुत देखा,

यह कैसा सपना ?
कि जाग कर भी रहे,

मेरी गरी दे बिन—
उहदा संत्र हिलदा पिआ···

कोई रग ना मनुरव ना नेड़े
फेर किहने मेरी झोली
नरेल पाइआ ?

मैं खोपा तोड़िआ
तां लोक गरी लैण आया
कच्ची गरी दा पाणी
मैं छन्निआं 'च पाया

कोई रख ना रवायत ना
दुई ना द्वैत ना
बूहे ते लुकाई ढुकी
ते खोपे दी गरी—
फेर वी ना मुकी।

इह किहा खोपा ?
इह किहा सुपना ?
ते सुपनिआं दे धागे
किन्ने कु लम्बे ?

इह छाती दा सावण
मैं छाती नूं हत्थ लाइआ
ता उहो गरी दा पाणी—
दुध वांग सिम्मे।

इह किहा भादों
इह किहा जादू

मेरी कोख में
    उसका पंख हिले

कोई पेड़ और मनुष्य मेरे पास नहीं
फिर किसने मेरी झोली में
    नारियल डाला ?

मैंने खोपा तोड़ा
तो लोग गरी लेने आये
कच्ची गरी का पानी
मैंने कटोरों में डाला

कोई रस्म ना रवायत ना
दुई ना द्वैत ना
द्वार पर असंख्य लोग आ
पर खोपे की गरी—
    फिर भी न खत्म हुई

यह कैसा खोपा !
यह कैसा सपना ?
और सपनों के धागे
    कितने लम्बे !

यह छाती का सावन
मैंने छाती को हाथ लगा
तो यह गरी का पानी—
    दूध की तरह टपका।

यह कैसा भादो ?
यह कैसा जादू !

राय गलां निग्रारिग्रां
इस गर्भ दे बालक दा
चोला कौण सीवेगा

इह कही पच्छी
इह कहे मुड्ढे
मैं यल जिवें सारी रात
फिरना ग्रटेरिग्रां…

ग्रगु दे महीने—
तृप्ता जागी ते विरागी

"नी जिन्दे मेरिए।
तू किहदे लई कतनी ए
मोह दी पूणी ?

मोह दिग्रां तंदा विच
ग्रम्बर ना वलीदा
सूरज ना बझींदा

इक सच जिही वस्तु
दह दा चोला ना कतीदा…"

ते तृप्ता ने कुख ग्रग्गे
मत्था निवाइग्रा—
मैं सुपनिग्रां दा भेत पाइग्रा
इह ना ग्रपणा ना पराइग्रा

कोई ग्रजल दा जोगी—
जिवें मौज विच ग्राइग्रा

सब बातें न्यारी
इस गर्भ के बालक का
    चोला कौन सीयेगा ?

यह कैसा पटेरन ?
यह कैसे मुहूर्त ;
मैंने कल जैसे सारी रात
    किरणें पटेरी…

असौज के महीने—
तृष्णा जागी और बैरागी

"अरी मेरी ज़िन्दगी !
तू किसके लिए कातती है
    मोह की पूनी ;

मोह के तार में
अम्बर न लपेटा जाता
सूरज न बांधा जाता

एक रत्ती भी वस्तु
इसका चोला न काता जाता…"

और तृष्णा ने कोख के धागे
    माया मथाया
मैंने सपनों का मर्म पाया
यह ना अपना ना पराया

कोई चरखा ना तांगी—
    जैसे कोख में धागा

ऐंवे घड़ी पल बैठा
सेके कुख दी धूणी

नी जिन्दे मेरिए !
तू किहदे लई कतनी एं—
मोह दी पूणी···

मेरा कत्रक धर्मी
मेरी जिन्द सुकर्मी
मेरी कुख दी धूणी
कत्ते मग्ग दी पूणी

बलिम्रा देह दा दीवा
छोहिम्रा धानण दा तीला···
सद्दो धरती दी दाई
मेरा, पहिलड़ा बीला···

यूं ही पलभर बैठा—
      सेंके कोख की धूनी…

"मरी मेरी जिन्दगी
तू किसके लिए कातती है—
      मोह की पूनी…

मेरा कार्तिक धर्मी
मेरी जिन्दगी सुकर्मी
मेरी कोख की धूनी
कते भाग की पूनी

दीप देह का जला
जिनका प्रकाश का हुआ
बुलाओ धरती की दाई
मेरा पहला जापा…"

खाली जगह

सिर्फ दो रजवाड़े सन—
इक ने मैनुं ते उहनूं बेदखल कीता सी,
ते दूजे नू असां दोहां ने त्याग दित्ता सी ।

नंगे असमान दे हेठां—
मैं *किन्ना ही* चिर
पिंडे दे मीह् विच भिजदी रही
उह् क़िन्ना ही चिर
पिंडे दे मींह् विच गलदा रहा ।

फिर उमरां दे मोह् नू—
इक ज़हर वांग पीके
उहदे *कम्बदे हत्थ ने मेरा हत्थ फड़िया*
चल ! छिणा दे सिर ते इक छत्त पाइये
ओह् वेख ! परां—साहमणे, औथे
सच्च अते भूठ दे विचकार—कुछ जगाह खाली है···

खाली जगह

सिर्फ़ दो रजवाड़े थे—
एक ने मुझे और उसे वेदखल किया था
और दूसरे को हम दोनों ने त्याग दिया था।

नग्न आकाश के नीचे—
मैं कितनी ही देर—
तन के मेंह में भीगती रही,
वह कितनी ही देर
तन के मेंह में गलता रहा।

फिर बरसों के मोह को—
एक जहर की तरह पी कर
उसने कांपते हाथों से मेरा हाथ
चल ! क्षणों के सिर पर एक
वह देख ! परे—सामने, उधर
सच और झूठ के बीच—कुछ जगह खाली है…

□